आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received: 12/05/2022; Accepted: 07/06/2022; Published: 24/06/2022

लेख

यात्रा साहित्य के पितामह महापंडित राहुल सांकृत्यायन

- डॉ. संगीता श्रीवास्तव
वाराणसी
मोबाइल: 8887942025

डॉ. संगीता श्रीवास्तव, यात्रा साहित्य के पितामह महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 2/जून 2022,(128-136)

अपने 70 वर्षों के जीवन में वे निरंतर सक्रिय और गतिशील रहे। एक साथ अनेक मोर्चों पर लड़ते रहे। हर मोर्चे का अपना खास मकसद रहा। भारतीय समाज की संरचना जाति,वर्ण और वर्ग की विशेषताओं, कमजोरियों, राजनैतिक, सामाजिक स्थितियों एवं धार्मिक उतार-चढ़ाव के समर्थन और विरोध में निरंतर उनकी लेखनी चलती रही । उनके हाथ कभी रुके नहीं और कदम कभी थके नहीं। वैज्ञानिक चेतना और समग्र विश्व दृष्टि के लिए अनवरत आत्म संघर्ष उनकी रचनाओं में खुलकर व्यक्त हुआ है । ज्ञान की पिपासा और निरंतर काम करते रहने की आकुलता और बेचैनी उनके व्यक्तित्व की विशेषता ही नहीं रही बल्कि लेखन की भी विशिष्टता रही। उनका मानना है कि ज्ञान विचार द्वारा वस्तु को जानने की एक चिरंतन और अंतहीन प्रक्रिया है और ज्ञानात्मक चेतना मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व से निर्धारित और प्रभावित होती है।

जिस महान यायावर के विषय में मैं यह लेख सृजित कर रही हूँ उनके साहित्य और विचारों से अनेकानेक लोग परिचित भी हैं और अपरिचित भी । वे हैं यात्रा साहित्य के पितामह महापंडित राहुल सांकृत्यायन। जिन्होंने बुद्ध को उद्धृत किया कि बुद्ध कह गए हैं - सब कुछ क्षणिक है। परंतु वे लेलिन से भी प्रभावित रहे। लेलिन ने कहा है कि कुछ भी अंतिम नहीं है। इसलिए मैं नहीं मानता हूँ कि कोई मनुष्य पूर्ण है, मैंने कोई सत्य पर एकाधिकार नहीं कर रखा है। मैं अपना काम करता हूँ। भावी पीढ़ी आएगी और मेरे काम को सुधारेगी।

कितनी विराट दृष्टि और विचार अहंकार रहित। जब मनुष्य स्वीकार कर ले कि सबकुछ क्षणिक है और यह भी कि कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं अर्थात स्वयं में त्रुटियां होना स्वाभाविक है और मेरी त्रुटियों को भावी पीढ़ी सुधारेगी, ऐसा व्यक्तित्व पूजनीय है। जीवन के हर पल का सदुपयोग उन्हें सदैव ऊर्जावान बनाता रहा। जीवन की क्षमता का भी उन्हें पूर्ण आभास था। राहुल जी इसलिए प्रतिगामी और प्रगतिशील रहते हुए सतत अपने कार्य और लेखन के प्रति जागरूक रहे। सतत गतिशीलता और निरंतर अध्ययन के कारण उनकी दृष्टि शनै शनै तीक्ष्ण होती गई और अपने अनुभव कोष को वह कागज पर उतारते गए, बिना यह विचार किए कि उनके विचार या लेखन से कोई सहमत होगा या असहमत। कोई मनुष्य पूर्ण नहीं है यह बात वे मानते थे।

एक विश्रांत यायावर जो कभी हारा नहीं, रुका नहीं, थका नहीं। जीवनको एक सतत यात्रा का पर्याय बनाकर यही माना और किया भी। अपने घर परिवार से मोहभंग और 1907 में कोलकाता की पहली उड़ान, वह भी एकाकी बगैर किसी संसाधन के। इस उड़ान में एक ठिकाना बनारस भी रहा। इस यात्रा में पहली बार वे बनारस भी आए और थोड़ा बहुत ही परिचय लेकर आगे बढ़ गए। सन 1910 ईस्वी के बाद घुमक्कड़ी और सधुक्कड़ी उनके जीवन में रच बस गई। सन 1911-12 में छपरा के परसा मठ के महंत से वे मिले। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो महंत राम कुमार दास ने उन्हें 1912 -13 में अपना उत्तराधिकारी बना दिया पर वे स्वतंत्रता प्रिय थे इसलिए मठ का यांत्रिक जीवन उन्हें पसंद नहीं आया और अपनी यात्रा दक्षिण भारत मद्रास की ओर की। अपनी लंबी लंबी यात्राओं में विभिन्न भाषाओं को सीखते रहना उनका शगल बन गया। वह मद्रास से रामेश्वरम तक गए और तमिल भाषा सीखे। सन 1914 में पुनः लौटकर परसा मठ आ गए, फिर वह अयोध्या गए वहाँ वेदों और वेदांतों का अध्ययन किया और जीवन का प्रथम व्याख्यान भी इसी दौरान अयोध्या में दिया। आर्य समाज से अंतरंग हुए तो वेद अध्ययन कर लिया। वह युवा आर्य समाजी सन्यासी बनने पर नास्तिक बने, फिर आगरा रह गए। वहाँ संस्कृत अरबी के धर्म ग्रंथ और इतिहास का अध्ययन किया। सन 1916 में वे लाहौर गए और संस्कृत तथा अरबी ग्रंथों का विशद और गहन अध्ययन किया। सन 1917 में रूसी क्रांति हुई और इससे प्रभावित हो 1918 में उन्होंने साम्यवादी दर्शन का अध्ययन करना आरंभ किया। 1921 - 22 में वे कम्युनिस्ट नेता टाटास्की की प्रसिद्ध पुस्तक बोल्शेविक एवं विश्व क्रांति पढ़ी । वर्ष 1922 ई में वे नेपाल गए और बौद्ध विद्वानों लामाओं और बौद्ध भिक्षुओं से ज्ञान प्राप्त किया। उम्र के पड़ाव पार करते करते वे अध्ययन, दृष्टिकोण और विचारों में भी विभिन्न पड़ावों को निरंतर ग्रहण और आत्मसात करते चलते, यही यात्रा उनकी जीवन पर्यंत साथ साथ चलती रही।

राहुल जी की यात्राएँ जितनी बाहर थी उतनी ही आंतरिक भी। अपनी दुरूह यात्राओं से उन्होंने ज्ञानार्जन किया और विचारों का विस्तृत फलक प्राप्त किया। अपनी सोच को नई उड़ान दी, नई दृष्टि दी, तब उसे लिपिबद्ध किया। उन्होंने कभी किसी की कही हुई बातों को मन से नहीं लगाया। वसुधैव कुटुंबकम का समभाव सदैव ही उनके मन में हिलोरे लेता रहा। तभी 1922 ई में वे छपरा में जेल गए और पुनः जब 1923 ई

में हजारीबाग जेल गए तो विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की परिकल्पना ने मन में जन्म लिया, उसका साकार रूप 22 वीं सदी नामक उनकी कृति है जो उन्होंने जेल के दौरान लिखी। 2 वर्ष की सजा के बाद 1925 में जेल से रिहा हुए और 1926 में उन्होंने तिब्बत की यात्रा की।

सन 1922 से 1937 के मध्य राहुल जी के जीवन और चिंतन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। इस दौरान उन्होंने जीवन जगत, दर्शन, धर्म और राजनीति का गहरा अध्ययन किया तथा 1930- 31 में अनीश्वरवादी हो गए। इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारण बुद्ध के विचारों का प्रभाव रहा है। बौद्ध दर्शन ने उन्हें गहरे अंतःस्थल तक प्रभावित किया। इसके अध्ययन के क्रम में तिब्बत, श्रीलंका, जापान और चीन की यात्राएँ की। सन् 1927-28 में उन्होंने श्रीलंका में अध्ययन और अध्यापन दोनों किया। सन् 1929 में तिब्बत में सवा साल व्यतीत कर बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया और खच्चरों पर लादकर बौद्ध ग्रंथ चित्रपट और अन्य सामग्री भारत लाए। इस समय वे रामअवतार से राहुल सांकृत्यायन बन चुके थे। श्रीलंका स्थित विद्यालंकार विहार में बौद्ध भिक्षु के रूप में दीक्षा लेने के बाद उन्हें यह नाम स्वरूप उपाधि मिली। सन् 1932 - 1933 में वे यूरोप की यात्रा पर गए। सन् 1934 में दोबारा तिब्बत गए। उनकी यात्राएँ सदैव उद्देश्य प्रधान ही होती थी। इस बार वे तिब्बत की यात्रा में गहन बौद्ध अध्ययन के लिए गए। वे बौद्ध धर्म के मानवतावादी दृष्टिकोण से अत्यधिक प्रभावित थे और इसीलिए बौद्ध धर्म ग्रंथों का चिंतन, मनन व अध्ययन करना चाहते थे। सन् 1935 में उन्होंने जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान और सोवियत रूस की यात्रा की और वहाँ की संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, सामाजिक उतार-चढ़ाव धर्म-दर्शन राजनीति सभी का गहन अध्ययन किया। सन 1936 में तीसरी बार तिब्बत गए फिर 1937 में दूसरी बार रूस गए। इन निरंतर यात्राओं में उनकी कलम भी सतत गतिशील रही और वह गांधीवादी और साम्यवाद तथा जमींदार प्रथा जैसे लेख लिखते रहे। उनकी यात्राओं के दौरान वे देशों के इतिहास का भी अध्ययन करते थे साथ ही वहाँ की भाषा भी सीखते रहते थे। रूस में व्यतीत किए समय में उन्होंने रूसी भाषा सीख ली। 1938-39 में अंबारी के किसान आंदोलन में भाग लिया और इसी आंदोलन में 1939 में उन पर लाठी भी बरसी और वे जेल भी गए। जहाँ एक ओर वे विदेशी यात्राएँ करते, इतिहास जानते, भाषा सीखते वहीं दूसरी ओर अपने देश भारत में आकर किसान आंदोलनों में भाग भी लेते और स्वदेश में अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक भी करते।

यह वह समय था जब राहुल जी विश्व की यात्राएँ कर उसके ऐतिहासिक, सामाजिक राजनैतिक धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश से बहुधा परिचित हो चुके थे और जान गए थे कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश की भोली जनता के लिए क्या महत्वपूर्ण, उचित और सार्थक है। भारतीयों की अशिक्षा और गरीबी ने उन्हें ऊपर उठने नहीं दिया यह बात भी भलीभाँति जानते थे। धर्म की वास्तविकता और वोट की राजनीति से वे परिचित हो चुके थे। वे कर्म को ही प्रधान मानते थे। धार्मिक भेदभाव, उँच-नीच, जाति, वर्ण, वर्ग सब को धता बताते हुए जेल में ही तुम्हारे छय नामक कृति का सृजन करते हैं।

विभिन्न विचारधाराओं, विभिन्न राजनैतिक विचारों को समय-समय पर छोड़ते और पहनते गए। सन् 1941 में उन्होंने दर्शन दिग्दर्शन, मानव समाज, वैज्ञानिक भौतिकवाद और बौद्ध दर्शन जैसी श्रेष्ठ कृतियों का सृजन किया जो विश्व विख्यात हुईं। इस समय तक वे 34 भाषाओं के जानकार हो गए थे। डॉक्टर प्रभाकर माचवे ने लिखा है- वह 34 भाषाओं के ज्ञाता थे यह जानकर विश्वास नहीं होता है कि कैसे उन्होंने इतनी भाषाएँ सीखीं।

राहुल जी जीवन में परिवर्तनशील रहे। विभिन्न धाराओं और विचारों से जब उनका मोहभंग हुआ तो उन्होंने बौद्ध दर्शन को ही एक वैचारिक आधार बना लिया। उनका मानना था कि ज्ञान, विचार द्वारा वस्तु को जानने की एक चिरंतन तथा अंतहीन प्रक्रिया है और ज्ञानात्मक चेतना मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व से निर्धारित और प्रभावित होती है। इतिहास, दर्शन, राजनीति और साहित्य के विषयगत राहुल जी का ज्ञान, समय और कालखंड के अनुसार विकसित होता गया। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों तक लिखा और विशद साहित्य रचा। उन्होंने अपने साहित्य का सृजन समाज को समझने समझाने और उसे मानवता की श्रृंखला से जुड़ने के लिए ही किया। राहुल जी जैसे विराट रचना फलक के लेखक की वैचारिक तेजस्विता, मौलिक प्रतिभा और प्रतिबद्धता बेमिसाल है। उनकी रचनात्मकता तीन स्तरों में विभाजित है, पहली वे जीवन और समाज की वैज्ञानिक दृष्टि से जाँच करते हैं, दूसरी वे जीवन में हस्तक्षेप करते हुए आमजन के मानसिक स्तर को उन्नत करने के प्रयास से प्रेरित हैं और तीसरे स्तर पर वह जनता की सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी निभाते हुए जन साहित्य की परंपरा को समृद्ध करते हैं।

वे महान लेखक और जनयोद्धा के साथ-साथ बड़े घुमक्कड़ भी थे। यह बात उनकी यात्राओं से पूर्ण स्पष्ट है। अपने पूर्ण जीवन काल का अधिकांश भाग उन्होंने अपनी यात्राओं में ही व्यतीत किया। इन यात्राओं ने उनके बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी यह यात्राएँ ज्ञान यात्राएँ रहीं। उन्होंने घुमक्कड़ी को मनुष्य का आदि सनातन धर्म माना है, जिसके बिना दृष्टि की व्यापकता और विचारों की गहराई नहीं मिल सकती। यह घुमक्कड़ धर्म ही है जो किसी जात-पात को नहीं मानता। यह एक बेहद काव्यात्मक और मधुर रस है। राहुल जी के लिए घुमक्कड़ वह काव्य रस है, जो आनंद प्रदान करता है और ऐसा आनंद जो तन और मन दोनों को ऊर्जावान बना देता है। राहुल जी के लिए यात्राएँ जीवन गति का पर्याय रहीं। चरैवेति चरैवेति का आंतरिक उद्घोष उन्हें यात्राएँ कराता रहा। उनकी घुमक्कड़ी ने इन्हें ज्ञान के शिखर पर पहुँचा दिया। अपने गुरु कपोत राज के वचन को पथ प्रदर्शक बना लिया -

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ ।

जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ ।।

राहुल जी कहते है - कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है। देशाटन, स्थान , दर्शन और विभिन्न दुर्गम यात्राओं से संबंधित उन्होंने 22 पुस्तकें लिखीं। यह कृतियाँ महज यात्रा विवरण नहीं है

बल्कि इन के माध्यम से इतिहास, भूगोल, संस्कृति, अर्थशास्त्र, राजनीति व संपूर्ण समाज व्यवस्था का शब्द चित्र उन्होंने चित्रित किया है। यह कृतियाँ समाज का ऐसा शब्द क्षेत्र है जो अतुलनीय और प्रामाणिक है। इनमें उल्लेखनीय कृतियाँ हैं- दार्जिलिंग परिचय- 1949-50,कुमाऊं1950, किन्नर देश में1948, गढ़वाल1950-52, नेपाल1952-53, जौनसार देहरादून1953, मेरी यूरोप यात्रा1932, मेरी तिब्बत यात्रा1934, जापान1935, ईरान1936, रूस में 25 माह1951, यात्रा के पन्ने1951, एशिया के दुर्गम भूखंडों में1956, चीन में कम्यून1959, सोवियत भूमि1938, सोवियत मध्य एशिया1947, घुमक्कड़ शास्त्र1949।

हिंदी के यात्रा साहित्य में राहुल जी का अप्रतिम योगदान है। यूरोपीय देशों जापान चीन तिब्बत और श्रीलंका जैसे धर्म संस्कृति और ज्ञान की विभिन्न विधाओं के लिए महत्वपूर्ण रहे छात्रों के उनके यात्रा संस्मरण ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से अमूल्य हैं। तिब्बत की चार यात्रा में उन्होंने 363 महत्वपूर्ण पोथियों की खोज की। घुमक्कड़ शास्त्र में वे कहते हैं- आदमी जब अछूती प्रकृति और उसकी संतानों में जाकर महीना और साल बिताता है उस वक्त ही उसे जीवन का आनंद आता है, वह हर रोज नए नए अविष्कार करता है, कभी इतिहास, कभी निबंध, कभी भाषा और कभी दूसरे विषयों में नई-नई खोज करता है। वे आगे कहते हैं- घुमक्कड़ी लेखक और कलाकार के लिए धर्म विजय का प्रयाण है, वह कला विजय का प्रयाण है और साहित्य विजय का भी। वस्तुतः घुमक्कड़ को साधारण बात नहीं समझनी चाहिए यह सत्य की खोज के लिए कला निर्माण के लिए शाह भावनाओं के प्रसार के लिए महान दिग्विजय है। (घुमक्कड़ शास्त्र पृष्ठ संख्या 83)।

विपुल बौद्ध साहित्य भाषा शास्त्र और इतिहास के अनेक अपरिचित तथ्यों को राहुल जी ने उद्घाटित किया और यह ऐतिहासिक कार्य उनकी इन दुर्गम और दुरूह यात्राओं के कारण ही संभव हो सका है। उनके कथा साहित्य के विशाल और विस्तार में यात्राओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्हीं यात्राओं से उन्हें नए विचार मिले और ठोस और प्रामाणिक तथ्य भी प्राप्त हुए जिनसे उनकी ऐतिहासिक दृष्टि को पुष्टता प्रदान की। अपनी चार तिब्बत यात्राओं से कंजूर और तंजूर ग्रंथों के अलावा1619 तिब्बती हस्तलिखित पांडुलिपियाँ वे पैदल भारत लाए यह सामग्री पटना संग्रहालय में रखी हुई है।

स्वामी विवेकानंद के बाद राहुल जी पहले आधुनिक भारतीय विचारक है जिन्होंने यूरोप सहित दुनिया के कई देशों में जाकर भारतीय दर्शन और चिंतन की व्यापकता और उसकी गहराई का प्रचार प्रसार किया। पैरिस, फ्रांस, पुर्तगाल, लंदन, मास्को और कोलंबो में उन्होंने कई व्याख्यान दिए और लोगों का ध्यान भारतीय दर्शन और चिंतन धारा की ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपनी आत्मकथा को मेरी जीवन यात्रा का नाम दिया। उन्होंने अपने जीवन को कथा या कहानी नहीं बल्कि एक यात्रा माना है।

बुद्ध और महावीर जैसा यायावर दुनिया में दूसरा नहीं। मानवता तपस्या और त्याग का अन्य कोई दूसरा बुद्ध और महावीर जैसा नहीं। वे लिखते हैं - स्वामी दयानंद घुमक्कड़ थे। उन्होंने बतलाया कि मानव स्थावर वृक्ष नहीं है वह जंगम प्राणी है। चलना मानव का धर्म है जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी

नहीं। राहुल जी सांस्कृतिक चेतना के यायावर थे। उनके लिए यात्रा केवल भटकना या हाइकिंग के लिए हाई किंग नहीं था। यात्रा का मानो उन्हें नशा सा हो गया था। जीवन और जगत संबंधित अनुभव प्राप्ति की अनंत जिज्ञासा उनकी घुमक्कड़ वृत्ति का आधार रही है। उन्हें इसका स्पष्ट बोध था कि एक ही स्थान पर स्थिर रहने से मनुष्य के अनुभव सीमित और संकुचित हो जाते हैं। नित्य नए भ्रमण से नूतन ज्ञान प्राप्त होता है और जीवन व समाज के प्रति उसका दृष्टिकोण विकसित होता है। उनमें वसुधैव कुटुंबकम की भावना जागृत होती है। विभिन्न संप्रदायों और विभिन्न विचारों के संस्पर्श में आने पर पर्यटक जैसे उदार और विचार सहिष्णु भी बन जाता है।

अपने उपरोक्त विस्तार में मैंने बताया कि वे सांस्कृतिक चेतना के यायावर थे क्योंकि वे देश विदेश की यात्राओं में वहाँ के लोगों के रहन-सहन, उनकी भाषा, उनके विचार, रीति, रिवाज, उद्भव, विकास प्रक्रिया, धर्म, सभ्यता सभी को जानते और उसका ज्ञानार्जन करते। उनकी बार-बार प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्राएँ उनके प्राकृतिक प्रेम को दर्शाती हैं परंतु इससे बढ़कर भी वे मानव के प्रति अति संवेदनशील रहे। मानवता के प्रति उनमें दृढ़ आसक्ति रही, फिर भी कभी भी किसी मुँह से आसक्त होकर रुके नहीं, वे यात्राएँ करते रहे। दूसरी ओर उनकी कलम सदा चलायमान रही। खोज के संदर्भ में जीवन का चित्रण कर उन्होंने हिंदी यात्रा साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनका सारा जीवन यात्रा को ही समर्पित था वे स्वयं यात्रा पुरुष के रूप में जाने और माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को व्यक्ति ना कहकर बहुमुखी प्रतिभाशाली या भार्गव कहा जाता है। राहुल जी की समानता कन्नड़ साहित्य के शिव राम कारंत से की जा सकती है क्योंकि दोनों लेखक अदम्य उत्साही क्रांतिकारी और मानवतावादी हैं। राहुल जी अपने आप में एक विस्मय हैं, कारंत भी अपने आप में एक आश्चर्य हैं। कारंत आधुनिक कन्नड साहित्य में ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य में भी अनन्य है। हिंदी साहित्य में राहुल जी जैसे क्रांतिकारी कलाकार किसी भी युग में पैदा नहीं हुए भारतीय साहित्य में उनका व्यक्तित्व विराट है।

राहुल जी की यात्राएँ कभी पैदल तो कभी स्थल मार्ग के साधनों कभी जल मार्ग और कभी आकाश मार्ग से होती रही । अपने जीवन के 40 वर्षों से अधिक का समय उन्होंने यात्राओं में ही व्यतीत किया उन्होंने स्वयं कहा- मुझे घुमक्कड़ी में स्वतः एक प्रकार का आनंद आता है और अभी भी कर सकता हूँ यद्यपि शरीर उसके लिए पहले की तरह सहायक नहीं है। यात्रा ने ही मेरे हाथ में जबरदस्ती कलम पकड़ा दी और स्वयं ही लेखन शैली बनती चली गई। कलम के दरवाजे को खोलने का काम मेरे लिए यात्राओं ने ही किया इसलिए मैं इनका कृतज्ञ हूँ। यही वजह है कि वे हिंदी साहित्य को 20 उच्च कोटि के यात्रा ग्रंथों की भेंट कर पाए। पर्यटन के लिए प्रोत्साहन देते हुए वह नवयुवकों का आह्वान करते हैं- दुनिया में मानव जन्म और जवानी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए तैयार है।

अपनी विविध सांस्कृतिक यात्राओं में उन्होंने बड़े-बड़े कष्टों का सामना किया परंतु केंद्र में सदैव ही लक्ष्य रहा। उन्होंने कष्टों, परेशानियों और दिक्कतों को धूल की तरह तन से झाड़ दिया और सदा आगे बढ़ते रहे। ज्ञान की उत्कट लालसा के कारण अपनी यात्राओं में वे फकीरों की तरह जीवन व्यतीत करते। अपनी यात्राओं में सुदूर

भूखंडों में रहकर ऐसे प्रामाणिक शब्दचित्र अंकित किए हैं जो अन्यत्र मुश्किल ही नहीं दुर्लभ हैं। उनकी ऐतिहासिक कृति मध्य एशिया का इतिहास, तिब्बत में सवा वर्ष, जापान, श्रीलंका यात्रा या अन्य कोई भी यात्रा हो वह चित्रण पाठकों के सामने चलचित्र की तरह खुलने लगता है और पाठक उत्सुकता और रोचकता में आगे बढ़ता जाता है।

यायावर राहुल जी का जयतु जयतु घुमक्कड़ पंथा उद्घोष था। उन्होंने अतीत वर्तमान और भविष्य तीनों कालों को एक साथ दिया है। उन्होंने अतीत से प्रेरणा ली वर्तमान के संघर्ष का हल खोजा और भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न मूर्तिमान किया। मानवता के सार्वभौम हित को सुरक्षित रखने वाली विचारधारा उनके जीवन और साहित्य का साधन और साध्य रही । किन्नर देश में नामक कृति में वे घुमक्कडों से भी आशा करते हैं की सच्चा घुमक्कड़ धर्म, जाति, देश, काल, सारी सीमाओं से मुक्त होता है। वह दुनिया से लेता कम और देता अधिक है।(पृष्ठ84-85)। वास्तव में राहुल जी केवल शब्द के अर्थ में ही घुमक्कड़ नहीं थे बल्कि उनकी व्यंजना में भी आजीवन घुमक्कड़ रहे।

घुमक्कड़ स्वामी नामक कृति उनकी अनुपम कृति है इसमें एक ओर जहाँ यात्रा वृतांत है वहीं हरिशरणानंद की जीवन कथा भी है। यह एक ऐसी अद्भुत कृति है जिसमें यात्रा और जीवनी दोनों विधाओं का एक अलौकिक मेल विद्यमान है। यायावरी के क्षेत्र में राहुल जी की श्रेष्ठ कृति घुमक्कड़ शास्त्र है जिसके प्राक्कथन में वे लिखते हैं घुमक्कड़ शास्त्र के लिखने की आवश्यकता मैं बहुत दिन से अनुभव कर रहा था। मैं समझता हूँ कि और भी समान धर्मबंधु इसकी आवश्यकता को महसूस कर रहे होंगे। घुमक्कड़ी का अंकुर पैदा करना, इस शास्त्र का काम नहीं है, बल्कि जन्मजात अंकुरों की पुष्टि, परिवर्धन और मार्ग प्रदर्शन इस ग्रंथ का लक्ष्य है। इस ग्रंथ में वे आगे लिखते हैं कि मैं मानता हूँ पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम मुकुटित शिखरों के सौंदर्य, उनके रूप उनके गंध का अनुभव नहीं कर सकते, उसी तरह यात्रा कथाओं से आपको उस बूंद से भेंट नहीं हो सकती जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है। उनके अनुसार धुमक्कड़ी का आनंद सभी ले सकते हैं चाहे वह स्त्री हों या पुरुष। वे लिखते हैं घुमक्कड़ धर्म, ब्राह्मण धर्म जैसा संकुचित धर्म नहीं है, जिस में स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो। स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं जितना पुरुष। बुद्ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए ही नहीं बल्कि स्त्रियों के लिए भी घुमक्कड़ी करने का आदेश दिया। अपने इस ग्रंथ में उन्होंने बुद्ध, महावीर, नानक, स्वामी दयानंद, ईसा मसीह सभी को घुमक्कड़ी की श्रेणी में खड़ा किया है। वे कहते हैं घुमक्कड़ होना आदमी के लिए परम सौभाग्य की बात है। यह पंथ अपने अनुयाई को मरने के बाद किसी काल्पनिक स्वर्ग का प्रलोभन नहीं देता इसके लिए तो कह सकते हैं क्या खूब सौदा नगद है इस हाथ ले इस हाथ दे।

अपनी यात्राओं में राहुल जी से पूर्व किसी भी यायावर ने तिब्बत ,बौद्ध धर्म व दर्शन या मध्य एशिया पर इतने प्रामाणिक तथ्यों के साथ लेखन नहीं किया इसलिए ऐसे अमूल्य ग्रंथों की कमी है। तिब्बती भोट भाषा और वहाँ की कई विलुप्त और अनजान सी जनजातियों और उनके रीति-रिवाजों के बारे में पहली बार राहुल जी

ने ही साहित्य जगत को अवगत कराया। राहुल जी की यात्रा वर्णन में ऐसा प्रतीत होता है कि कोई जिज्ञासु विद्यार्थी कब, कहाँ ,क्यों कैसे कौन का ककहरा पढ़ रहा हो। खोजी वृत्ति और सूक्ष्म दृष्टि के कारण जब कोई नई बात सामने आती है तो वह उसके इतिहास का संपूर्ण विवरण भूत- भविष्य सभी की मीमांसा कर दिया करते हैं। अपने यात्रा वर्णन में उनकी लेखनी एक अनासक्त योगी की तरह चलती है। वह किसी के प्रति मोह माया आलोचना व्यक्तित्व से परे केवल सत्यता को ही चित्रित करते हैं। कहीं कहीं भविष्य की ओर भी उन्मुख हो जाते हैं। बे बिखरे अनजान इतिहास के पन्नों को समेटते से चलते हैं। किसी के कहने और आलोचना निंदा की परवाह नहीं करते ।

राहुल जी को यात्रा करने में उतना ही आनंद मिलता था जैसे मानसरोवर जल में हंस केलि करके मुक्ता फल प्राप्त करता है। उनका विश्वास था कि स्वतंत्र यायावरी से विश्व के मानव समुदाय और प्रकृति को यथार्थ रूप में देखा जा सकता है। यात्रा संस्मरण एक ओर जहाँ भूगोल से जोड़ता है तो वहीं दूसरी ओर साहसिक जिज्ञासा से भी जोड़ता है। यात्रा विराट मानव विकास का एक सीमित प्रतीक है। साहित्यिक यायावर को मुक्त मनोवृति के साथ घूमना चाहिए और विश्व को स्वयं की दृष्टि से देखकर सृजन करना चाहिए। तभी उसकी दृष्टि मौलिकता से ओतप्रोत होगी। यायावर एक गतिशील मनोवृति का धनी होता है प्राण संचार की पहली शर्त है गति इसलिए जो एक बार घुमक्कड़ धर्म अपना लेता है उसे पेंशन कहाँ और विश्राम कहाँ।

यायावरी जीवन राहुल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल आधार है। उनकी दृष्टि सदैव सृजनात्मकता की ओर रही। इसी यायावरी ने उन्हें बहु भाषाविद, पुराविद, साहित्यकार, इतिहासकार, समाज सेवक, समाज द्रष्टा, भविष्य द्रष्टा और अंततः महापंडित बनाया है। यायावरी जीवन के संस्मरण से संबंधित उनकी अनेकों कृतियाँ हैं जिनमें आजमगढ़ की पुरातात्विक यात्रा, किन्नर देश में सोवियत भूमि और विस्मृति के गर्भ में, इसके अतिरिक्त उनकी अनुवादित कृतियाँ अनाथ, शादी, निराली हीरे की खोज आदि अधिक प्रेरणा प्रदान वाले मनोरंजक ग्रंथ हैं।

यात्रा साहित्य किसी रचनाकार के भिन्न-भिन्न परिवेशों के प्रति अद्भुत कलात्मक संवेदनाओं का सृजनात्मक आलेख होता है, मात्र भौगोलिक विशेषताओं का लेखा-जोखा नहीं। और यदि रचनाकार कोई सामान्य पर्यटक ना होकर वह पंडित जी जैसा यायावरी हो, मुक्त चितेरा हो, जिसका फलक धर्म, इतिहास, दर्शन, पुरातत्व, साहित्य, राजनीति, संस्कृति, और भाषा के विविध आयामों से संपृक्त हो तो उसका यात्रा साहित्य पाठकों को कभी वर्णित स्थल विशेष के इतिहास के गलियारों में ले जाता है, कभी सांस्कृतिक विशेषताओं का दर्शन कराता है, कभी वहाँ की साहित्यिक उपलब्धियों को रेखांकित करता है, कभी प्रस्तुत विवरणों की पुरातात्विक संपुष्टि कराता है, तो कभी स्थानीय जन जीवन में प्रचारित धार्मिक रीति-रिवाजों आचार विचारों, व्यवहारों, दार्शनिक मतवादों तथा राजनीतिक परिस्थितियों का प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करता है। इतना ही नहीं अपने यात्रा वर्णनों में विदेश के व्यक्तियों और वस्तुओं का परिचय देते हुए वे अपने

देश के व्यक्तियों और वस्तुओं से तुलनात्मक आलोचना कर उनकी प्रवृत्ति और उनके यात्रा साहित्य को वर्णित स्थलों से अपरिचित पाठकों के लिए भी रोचक और बोधगम्य बना देते हैं।

राहुल जी का यात्रा साहित्य अतीत पर नहीं यथार्थ पर आधारित है। ऐसा यथार्थ जिसको उन्होंने भोगा है, अनुभव किया है और जिया भी है। ऐसा यथार्थ जिसकी अपनी सजीवता और जीवंतता है। यायावर राहुल का यात्रा साहित्य जिस प्रकार उनके जीवन काल में भारत के जनमानस पर मानव धर्म और धर्मनिरपेक्षता की छाप अंकित कर विकास की नवीन सांस्कृतिक चेतना को जागरण का आह्वान करा रहा था, उसी प्रकार आज बढ़ते हुए भाषावाद ,क्षेत्रीयता वाद प्रांतीयतावाद, जातिवाद, धार्मिक उन्माद और संकीर्ण भावनाओं को मिटाने के लिए प्रासंगिक, पठनीय और मननीय है।

****